

2021

**HINDI — HONOURS**

**Paper : DSE-A-2(2)**

**(Tulsidas)**

**Full Marks : 65**

*The figures in the margin indicate full marks.*

*Candidates are required to give their answers in their own words  
as far as practicable.*

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2×10
- (क) तुलसीदास का जन्मस्थान और जन्मकाल बताइए।
- (ख) तुलसीदास की किन्हीं दो कृतियों के नाम लिखिए।
- (ग) 'कवितावली' और 'रामचरितमानस' में कितने-कितने काण्ड हैं?
- (घ) 'रामचरितमानस' में प्रयुक्त किन्हीं दो छन्दों के नाम लिखिए।
- (ङ) 'कवितावली' और 'रामचरितमानस' की काव्य-भाषा के नाम बताइए।
- (च) 'चली नाई पद पदुम सिरू अति हित बारहिं बार'— 'पद पदुम' में निहित शब्दालंकार तथा अर्थालंकार के नाम लिखिए।
- (छ) 'राम चलत अति भयउ विषादू। सुन न जाइ पुर आतर नादू।।  
कुसगुन लंक अवध अति सोकू। हरष विषाद बिबस सुरलोकू।।'  
— इस चौपाई में वर्णित रस तथा उसका स्थायी भाव बताइए।
- (ज) नर-नाग बिबुध-बन्दिनी जय 'जहनु बालिका'। — इस पंक्ति में 'जहनु' कौन है तथा 'जहनु बालिका' किसे कहा गया है?
- (झ) 'करू संग सुसील सुसंतन सों, तजि कूर कुपंथ कुसाथहि से' — यह पंक्ति किस कृति की है तथा इसमें कौन-सा अलंकार है?
- (ञ) 'कासी मरत उपदेसत महेसु सोई'— यहाँ 'महेसु' कौन हैं और वे क्या उपदेश देते हैं?
2. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 10×3
- (क) 'कवितावली' का मूल प्रतिपाद्य क्या है? सोदाहरण विवेचन कीजिए।
- (ख) महाकाव्य की विशेषताओं के आधार पर 'रामचरितमानस' का मूल्यांकन कीजिए।
- (ग) तुलसी के काव्य की भाषागत विशेषताएँ बताइए।
- (घ) 'विनयपत्रिका' में निहित भक्ति भाव का विश्लेषण कीजिए।
- (ङ) तुलसीदास के सामाजिक चिंतन पर विचार कीजिए।

**Please Turn Over**

3. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

- (क) सियराम-सरूप अगाध अनूप बिलोचन-मीनन को जलु है।  
श्रुति रामकथा, मुख रामको नामु, हिउँ पुनि रामहि को थलु है॥  
मति रामहि सों, गति रामहि सों, रति रामसों, रामहि को बलु है।  
सबकी न कहै, तुलसी के मते, इतनो जग जीवन को फलु है॥
- (ख) पाइ सुदेह बिमोह-नही-तरनी न लही करनी न कहू की।  
राम कथा बरनी न बनाइ, सुनी न कथा प्रहलाद न धू की।  
अब जोर जरा जरि गात गयो, मन मानि गलानि कुबानि न मूकी।  
नीके कै ठीक दई 'तुलसी', अवलंब बड़ो उर आखर दू की॥
- (ग) मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई।  
हैं तो साईं द्रोह पै सेवक हित साईं ॥  
राम सो बड़ो है कौन मोसो कौन छोटे।  
राम सो खरो कौन है मोसो कौन खोटे॥  
लोक कहै राम को गुलाम हैं कहा वौं।  
एतो बड़ो अपराध भौ न मन बावौं ॥  
पाथ माथे चढ़े तृन तुलसी ज्यों नीचो।  
बोरत न बारि ताहि जानि आपु सींचो॥
- (घ) भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।  
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल॥  
सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।  
बिहसे करुनाएन चितइ जानकी लखन तन॥
-